शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संचार अनिवार्यता में समाचार-पत्रों की भूमिका

डॉ.दीपमाला गुप्ता
सहायक प्राध्यापक
पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
मध्यप्रदेश, भारत

भूमिका

संचार अनिवार्यता जीवन की अमूल्य निधि है। यही अनिवार्यता जीवन को चलायमान रखने के लिए अति आवश्यक है। संचार अनिवार्यता जीवन मूल्यों और नैतिकता को और बचाए रखने के लिए अति आवश्यक है। संचार की अनिवार्यता विश्व में सूचनाओं के आगमन और निगमन को सुचारू और अबाधित रूप से संचालित करने के लिए अति आवश्यक है। कोई भी संचार तभी सफल हो सकता है जब उसमें अनिवार्यता का तत्व होता है। अनिवार्यता संचार का वह तत्व है जो संचार को अर्थपूर्ण और सफल बनाता है। संचार अनिवार्यता जीवन को समाज और देष, विष्व समाज और परिवार को जोड़ने की इकाई है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'संचार अनिवार्यता में समाचार पत्रों की भूमिका' विषय पर विचार किया गया है।

संकेत शब्द : *संचार अनिवार्यता, प्रिंट मीडिया, समाचार-पत्र*

भूमिका

'संचार अनिवार्यता' को जब समाचार-पत्रों से जोड़ा जाता है तो यह चर्चा बहुत अधिक अर्थपूर्ण हो जाती है। समाचार-पत्र मानव-जीवन के लिए आज के परिपेक्ष्य में पूचना प्राप्ति का वो माध्यम है, जो उसके जीवन का निवार्य अंग है। मनुष्य कितना भी सूचना, टेलीविजन, रेडियो और सोशल मीडिया से ग्रहण कर ले, फिर भी समाचार-पत्र की आवश्यकता है। वर्तमान में भले ही जनसंचार के सशक्त माध्यम के रूप में टेलीविजन और रेडियो ने अपनी पहचान बनाई है, लेकिन जनसंचार का मजबूत स्तंभ आज भी समाचार-पत्र, पत्रिकाओं (प्रिंट मीडिया) को ही माना जाता है। हांलाकि अपने विशाल दर्शक वर्ग और तीव्रता के कारण रेडियो और टेलीविजन की ताकत अधिक मानी जा सकती है, लेकिन वाणी को शब्दों के रूप में रिकार्ड करने वाला आरंभिक माध्यम होने के कारण प्रिंट मीडिया का महत्व न सिर्फ बना रहेगा बल्कि वह दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। हाल ही में प्रिंट मीडिया के बारे में जारी की गयी रिपोर्ट में यह बात उभर कर सामने आयी है कि इलेक्ट्रोनिक मीडिया के विस्तार के बाद भी प्रिंट मीडिया बढ़त बनाये हुए है। इसकी प्रतियों की संख्या में निरंतर इजाफा हो रहा है।

"यह प्रबुद्ध पाठकों के लिए एक ऐसा दर्पण है, जिसकी सहायता से वे विश्व की गतिविधियों, स्वराष्ट्र के उत्थान पतन तथा क्षेत्र विशेष की ज्वलंत समस्याओं से परिचित होते हैं।"

"समाचार-पत्र आज के समय में हर बुद्धीजीवी वर्ग की आवश्यकता है। समाचार-पत्र का होना, जीवन में सम सामियिकी का ज्ञान होने के लिए अतिआवश्यक है। समाचार-पत्र देश-विदेश की

खबरें देकर मनुष्य ज्ञान, सूचना, जानकारी में बढ़ोत्तरी का माध्यम है।"

संचार के लिए समाचार-पत्र की आज के परिपेक्ष्य में महती भूमिका है। समाचार-पत्र मनुष्य की दिनचर्या का अभिन्न अंग बन गया। कई लोगों के गले में चाय तब तक नहीं उतरती, जब तक उसके हाथ में समाचार-पत्र नहीं आता। हम रेडियो पर, इंटरनेटपर, मोबाईल पर कितने भी समाचार सुन लें, पढ़ लें, लेकिन व्यक्ति के हाथ में समाचार-पत्र नहीं आता, तब तक उसे संतुष्टी नहीं मिलाती। जब तक वह प्रिंट कॉपी नहीं पढ़ता, तब तक उसे सूचना, जानकारी प्राप्त होने का आनंद नहीं आता। समाचार-पत्र की शुरुआत पहले मिशन के रूप में हुई थी, लेकिन समय के साथ इसका व्यावसायीकरण हो गया है, जिस कारण व्यक्ति अब बड़ी मात्रा में समाचार-पत्रों में विज्ञापन भी देख पाता है और उत्पाद की गुणवत्ता और कीमत के बारे में संपूर्ण जानकारी उसे समाचार-पत्र के माध्यम से प्राप्त होती है। समाचार-पत्र जीने की अनिवार्यता के साथ जीवन की भी अनिवार्यता बन गया है।

आज भले ही प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन अथवा इंटरनेट किसी भी माध्यम से खबरों के संचार को पत्रकारिता कहा जाता हो, लेकिन शुरुआत में केवल प्रिंट माध्यमों के द्वारा खबरों के आदान-प्रदान को ही प्रत्रकारिता कहा जाता था। इसके तीन पहलू हैं - पहला समाचारों को संकलित करना, दूसरा उन्हें संपादित कर छपने लायक बनाना और तीसरा समाचार पत्र अथवा पत्रिका के रूप में छापकर पाठक तक पहुंचाना। हांलाकि तीनों ही काम आपस में जुड़े हुए हैं, लेकिन पत्रकारिता के तहत हम पहले दो कामों को ही लेते हैं, क्योंकि प्रकाशन और वितरण का कार्य तकनीकी और प्रबंधकीय विभागों के अधीन होते हैं जबकि रिपोर्टिंग और संपादन के लिए एक विशेष बौद्धिक और सम्पादन कौशल की आवश्यकता होती है।

समाचार-पत्र समाज का थर्मामीटर है, जिससे समाज के तापमान को मापा जा सकता है। भविष्य की घटनाओं को संकेतित करने के कारण समाचार-पत्र को दूरबीन भी कहा जाता है। समाचार-पत्र दैनिक जीवन का अनिवार्य अंग है। महात्मा गांधी के अनुसार "सत्य की विजय के लिए समाचार-पत्र ही अनिवार्य साधन है। ऐसी कोई भी लड़ाई जिसका आधार आत्मबल हो, समाचार-पत्रों की सहायता के बिना नहीं चलाई जा सकती, अहिंसक उपायों से सत्य की विजय के लिए समाचार-पत्र एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य साधन है।"

शोध-उद्देश्य

'संचार अनिवार्यता' विकास की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसी प्रक्रिया के तहत मेरा शोध विषय 'संचार अनिवार्यता में समाचार-पत्रों की भूमिका' में संचार के समस्त माध्यमों का मानव-जीवन, दिनचर्या, सोच विचार, सामाजिकता, मनोविज्ञान और मनुष्य के जीवन-दर्शन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, इसी का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इसके तहत् निम्न लिखित उद्देश्य है :

समाचार-पत्रों की भूमिका और संचार अनिवार्यता पर शोध आवश्यक है।

सूचना अनिवार्यता को प्रिंट मीडिया के विविध पक्षों और प्रभावों का अध्ययन जानने के लिए प्रस्तुत शोध किया जा रहा है।

वर्तमान में विश्व में जो परिस्थितियां हैं, उससे उबरने के लिए भी संचार अनिवार्यता में समाचार-पत्रों की भूमिका पर विशेष शोध की आवश्यकता है। समाचार-पत्रों और संचार

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अनिवार्यता का जीवन में प्रभाव व स्थान जानने हेतु।

शोध-विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान के लिए, प्रश्नावली, साक्षात्कार, अनुसूची, अवलोकन, अंतर्वस्तु विश्लेषण और मनोवैज्ञानिक प्रभावों का व्यक्तिगत स्तर पर अध्ययन किया गया है।

शोध क्षेत्र/सीमा

शोध सीमा/ क्षेत्र की जब बात की जाती है तो शोध-कार्य के विषय क्षेत्र में आने वाले सभी विषयों का गहन अध्ययन किया जाता है। मेरा विषय 'संचार अनिवार्यता में समाचार-पत्रों की भूमिका' विषय पर संचार अनिवार्यता मेरे विषय की महत्वपूर्ण विषयवस्तु है और संचार अनिवार्यता का क्षेत्र इसमें समाहित है। मेरी विषयवस्तु में संचार में समाचार-पत्रों का विस्तृत वर्णन है और उस पर शोध मेरे विषय का क्षेत्र है। सभी माध्यमों का विस्तृत वर्णन और सभी परिप्रेक्षों में आकलन ही इस विषय की शोध सीमा है।

परिकल्पना

किसी भी शोध में परिकल्पना उस शोध में नक्शे में निर्माण की तरह कार्य करती है। किसी भी शोध के पहले एक परिकल्पना या उपकल्पना का निर्माण किया जाता है और उन प्रश्नों को तैयार किया जाता है। उनका जवाब शोध कार्य के दौरान तलाशा जाता है। परिकल्पना में रास्ता तय होता है और उस रास्ते पर चलकर शोध के आगे की दशा और दिशा तय होती है जो शोध को नए आयाम प्रदान करती है। सामाजिक परिवर्तन में नए दृष्टिकोण का उदय करती है। संचार अनिवार्यता जीवन में आने वाले परिवर्तनों की नींव है जो संचार को पुष्ट बनाने के साथ ही समाज में परिवर्तन का भी काम करती है।

सामाजिक दृष्टिकोण ने परिकल्पना के इन प्रश्नों को जन्म दिया है :

संचार अनिवार्यता जीवन के लिए कितनी उपयोगी हैं ?

संचार अनिवार्यता ना हो तो जीवन कैसा होगा ?

क्या समाचार-पत्रों के द्वारा जीवन की दिशा में बदलाव लाया जा सकता है ?

संचार अनिवार्यता समाचार-पत्रों से कितना प्रभावित होती है ?

निष्कर्ष

संचार अनिवार्यता जीवन की महत्वपूर्ण इकाई है। संचार/संवाद की महत्ता जीवन को जीवंत बनाए रखने का उच्चस्तरीय माध्यम है। बगैर संचार/संवाद के सूचना की अनिवार्यता को बरकरार रखना नामुमकिन है। प्रिंट मीडिया ने सिर्फ समाचार-पत्र की ही अनिवार्यता को ही नहीं बनाया है, प्रिंट मीडिया ने पत्र-पत्रिकाओं और विशेष संदर्भ पत्रिकाओं के माध्यम से लोगों के जीवन में विशेष परिवर्तन कर, उनके जीवन को नई दिशा प्रदान करने का कार्य भी किया है। इस तरह प्रिंट माध्यम लोगों के जीवन का अनिवार्य अंग बनकर उभरा है। और लोगों के जीवन को गतिशील बनाने का कार्य भी कर रहा है। प्रिंट मीडिया शिक्षित व्यक्ति के जीवन की अभिन्न इकाई होने के साथ ही व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास में भी सहायक के रूप में कार्य कर रहा है। संचार अनिवार्यता संचार के सभी माध्यमों पर लागू होती है, लेकिन संचार अनिवार्यता के विभिन्न पहलूओं में सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, प्रिंट मीडिया का जीवन में शामिल होना, प्रिंट मीडिया व्यक्ति के उठने से पहले उसके घर के दरवाजे पर दस्तक देता है और व्यक्ति जागने के बाद सबसे पहले समाचार-पत्र का मुख देखना ही पसंद करता है। और अगर किसी दिन समाचार-

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पत्र नहीं मिला तो उसे बैचेनी महसूस होने लगती है। व्यक्ति की यही बैचेनी उसके जीवन की अनिवार्यता है। उसे सुबह उठते ही समाचार-पत्र चाहिए, ताकि सूचना, जानकारी और मनोरंजन के साथ, अपने दिन की शुरुआत कर सके। समाचार-पत्र सजग, सतर्क करके इंसान के जीवन को जानकारी की पूर्णता प्रदान करता है। समाचार-पत्र जीवन की अनिवार्यता के साथ सूचना की अनिवार्यता का अभिन्न हिस्सा है। अनिवार्यता शब्द कई जगह बाध्यता का पर्याय होता है। लेकिन जब अनिवार्यता अच्छी आदतों के रूप में जीवन में शामिल हों तो वह अनिवार्यता व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक रूप में सामने आती है और व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ही लाती है। समाचार-पत्र पढ़ने की आदत कभी भी व्यक्ति के जीवन में नकारात्मक प्रभाव नहीं छोड़ती है। इसका कारण यह है की ये संचार अनिवार्यता जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाने के साथ ही जीवन को सही दिशा देने का कार्य भी करती है। प्रिंट मीडिया में संचार अनिवार्यता एक महत्वपूर्ण पहलू है जो मनुष्य के जीवन को जानकारी की अनिवार्यता की आदत डालता है, जो उसके जीवन को ज्ञान, धन और समृद्धि से परिपूर्ण कर देता है। कोई भी जीवन की अनिवार्यता जब जीवन में सकारात्मक रूप में रहती है तो जीवन में वह अनिवार्यता सदैव सकारात्मक प्रभाव ही लाकर रहेगी, इसलिए प्रिंट मीडिया संचार अनिवार्यता का महत्वपूर्ण कारक है।

किस तरह के समाचार पढ़ना पसंद हैं ?

(1) राजनैतिक (2) सामाजिक (3) सांस्कृतिक (4) आपराधिक

कौन-सा पाठक किस तरह की खबरें पढ़ना पसंद करता है, इसका कोई निश्चित पैमाना नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि हर पाठक समय पर परिस्थिति के अनुसार भी अपनी खबरों के चयन को लेकर स्थिति में परिवर्तन कर सकता है या समय या परिस्थिति के अनुसार उसकी पसंद में बदलाव आ सकता है। खबरों का चयन कैसा भी हो, चाहे खबरें राजनीति की हो या सामाजिक, सांस्कृतिक या आपराधिक। लेकिन व्यक्ति का निर्णय पसंद और परिस्थितियों में बदलाव, समय के साथ निश्चित रूप से आता है।

तालिका

क्रमांक	विकल्प	प्रतिशत
1	राजनैतिक	41
2	सामाजिक	31
3	सांस्कृतिक	20
4	आपराधिक	8

व्याख्या

पाठक किस तरह के समाचार पढ़ना पसंद करता है इस पर जब मीडिया से संबंधित 500 व्यक्तियों से बात की गई तो इसमें कई तथ्य सामने आए। 41 प्रतिशत लोग समाचार पत्रों में राजनैतिक समाचार ही पढ़ना पसंद करते हैं। वहीं 31 प्रतिशत लोग सामाजिक खबरें पढ़ना पसंद करते हैं। 20 प्रतिशत लोग सांस्कृतिक खबरें पढ़ना पसंद करते हैं, वहीं सिर्फ 8 प्रतिशत लोग अपराधिक खबरों को पढ़ना पसंद करते हैं।

सूचना क्रांति के इस दौर में भी अखबार का प्रिंटेड प्रारूप ही सर्वाधिक प्रचलित और अधिक पढ़ा जाता है। लोग छंटी हुई खबरें ही पढ़ना पसंद करते हैं लेकिन मोबाईल आजकल हर व्यक्ति की पहुँच में है, इसलिए ये भी लोगों तक खबरें पहुंचाने का एक बड़ा माध्यम बनकर उभरा है। वहीं इंटरनेट पर गुगल तो सर्वप्रचलित है जो

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

खबरों को जल्द से जल्द किसी भी समय लोगों तक पहुंचाता है।

तालिका

क्रमांक	विकल्प	प्रतिशत
1	प्रिंटेड प्रारूप	51
2	मोबाईल	11
3	इंटरनेट	14
4	सभी स्त्रोतों से	24

व्याख्या

अब तो वेब पोर्टल भी अखबार की समस्त सूचनाओं को एक जगह पर उपलब्ध कराते हैं जो इंटरनेट पर अखबार की समस्त सूचनाएं उपलब्ध कराते हैं। आज वेब पोर्टल को भी अखबार जगत ने जगह दी है। मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर के दैनिक समाचार पत्र नईदुनिया ने सर्वप्रथम पहले न्यूज पोर्टल 'वेब दुनिया' हिंदी पोर्टल को लांच किया,.जो खबरों को उसके पाठक तक सही तरीके से पहुंचाता है।

इस संबंध में जब मीडिया से संबंधित 500 लोगों से समाचार पत्र के प्रारूप के बारे में बात की गई तो कई रोचक तथ्य सामने आए। 51 प्रतिशत लोग आज भी अखबार को प्रिंटेड प्रारूप में ही पढ़ना पसंद करते हैं। उनमें 11 प्रतिशत लोग ऐसे भी हैं जो समाचार पत्र को मोबाईल पर पढ़ना पसंद करते हैं वहीं 14 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो सिर्फ इंटरनेट से खबरें प्राप्त करना पसंद करते हैं। और 24 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो इन सभी स्रोतों से खबरें प्राप्त करना पसंद करते हैं।

सुझाव

संचार अनिवार्यता जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस अनिवार्यता को कभी भी संचार माध्यमों से अलग नहीं किया जा सकता है।

समाचार पत्र जैसे संचार माध्यमों का प्रयोग करते समय इस बात का पूरा ध्यान रखा जाए कि जो माध्यम आपको शिक्षा, सूचना, जानकारी और मनोरंजन प्रदान कर रहा है कहीं वही माध्यम आपके आस-पास के लोगों की दिनचर्या या जीवन को नकारात्मक रूप में प्रभावित कर उनकी परेशानी तो नहीं बढ़ा रहा है।

संचार और संचार के माध्यमों का जितना सकारात्मक प्रयोग किया जएगा, तो जीवन उतना ही सरल, सहज और सुलभ होगा।

संचार माध्यमों के प्रयोग के समय को निश्चित करें ताकि जीवन का अनिवार्य कार्य बाधित ना हो।

सूचना क्रांति के इस दौर में संचार माध्यमों में प्रयोग अतिरेकता जीवन को व्यस्ततम बनाने के साथ ही दुविधापूर्ण भी बना देगी।

जनसंचार के समस्त माध्यमों का प्रयोग करते समय सामाजिक और आर्थिक स्थिति का आकलन अवश्य करें ताकि सूचना और संचार के माध्यम जीवन में बाधाएं उत्पन्न न करें।

संचार माध्यमों का प्रयोग करते समय शारीरिक गतिविधियां भी करते रहें, ताकि आपकी मानसिक व शारीरिक स्थिति न बिगड़े, क्योंकि अत्यधिक संचार माध्यमों का प्रयोग व्यक्ति को एकाकी जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है, जिसके कारण वह मानसिक तनाव, डिप्रेशन और अन्य मनोवैज्ञानिक दबाव में आ जाता है। इससे व्यक्ति की मानसिक स्थिति प्रभावित होती है।

संचार अनिवार्यता की बात की जाए तो वो सांस लेने की तरह अनिवार्य है, लेकिन ये सांस जब शुद्ध ताजा हवा के रूप में मिलेगी तो हम स्वस्थ जीवन जी पाएंगे, लेकिन जब जहरीली हवा होगी तो सांस लेना भी दूभर होगा। इसलिए संचार माध्यमों का शुद्धता और संतुलन के साथ प्रयोग

होगा तो संचार अनिवार्यता सकारात्मक और लाभदायक ही होगी चाहे माहौल कितना भी नकारात्मक क्यों न हो।

संदर्भ ग्रन्थ

1 चतुर्वेदी जगदीश्वर सिंह, सुधा, जनमाध्यम सैद्धांतिकी, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युटर्स लिमिटेड, 2002

2 दुबे श्यामाचरण, विकास का समाजशास्त्र, साक्षरा प्रकाशन, दिल्ली, 110032

3 डॉ. तिवारी अर्जुन, संपूर्ण पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2010

4 डॉ. तिवारी भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताब महल एजेंसी, इलाहाबाद, 1999

5 जैन रमेश संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण, मंगलदीप पब्लिकेशन, जयपुर, 2005

6 जनमाध्यम संप्रेषण और विकास, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, के-72 कृष्ण नगर दिल्ली

7 लाल बंशीधर, भारतीय स्वतंत्रता और हिन्दी पत्रकारिता, विद्यागृंथ कुटीर पब्लिकेशन

8 पारख जवरीमल्ल, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली

9 सिंह डॉ. ओमप्रकाश, संचार माध्यमों का प्रभाव, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित, क्लासिक पब्लिकेशन, 1993

10 सिंह डॉ.सोना, विकास संचार आशा पब्लिशिंग कंपनी, आगरा, 282004

11 शर्मा राधेश्याम, जनसंचार, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला,1999

12 वैदिक वेदप्रताप, हिन्दी पत्रकारिता के विविध आयाम, शब्दकार पब्लिकेशन, दिल्ली

शोध पत्रिकाएं

(पत्रकारिता एवं जनसंचार)

1 समागम, भोपाल

2 मीडिया विमर्श भोपाल

3 नटराज, बड़वानी

4 मीडिया मीमांसा, भोपाल

5 प्रतिमान

6 मध्यप्रदेश सामाजिक शोध समग्र, इंदौर

7 रिसर्च लिंक, इंदौर

8 ग्लोबल जर्नल ऑफ़ मास कम्युनिकेशन, कलकत्ता

9 नवीन शोध संसार, नीमच

10 संचार माध्यम, नई दिल्ली

11 मीडिया एशिया केरल

12 कम्युनिकेशन टुडे जयपुर

13 मीडिया वाच

14 ग्लोबल मीडिया एंड कम्युनिकेशन

15 पंचशील शोध समीक्षा

16 शोध उपकरण, कानपुर